शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2013

संपर्क भाषा हिन्दी और मीडिया

डॉ संध्या गंगराडे
प्राध्यापक (हिन्दी)
माता जीजा बाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या म.वि.इंदौर

शोध संक्षेप

प्राचीनकाल में भारत की सांस्कृतिक एकता को संस्कृत भाषा ने मजबूती प्रदान की। हमारे ऋषि-मुनियों की आर्ष और आप्त वाणियों ने समृद्ध साहित्य की रचना की। इस कारण भारत कभी प्रादेशिक सीमाओं में नहीं बंधा। धर्मग्रंथों ने उत्तर से लेकर दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम तक के जनमानस को एकता के सूत्र में पिरोये रखा। आजादी आंदोलन में वही भूमिका हिन्दी ने संपर्क भाषा के रूप में निभायी। आधुनिक युग में मीडिया ने हिन्दी भाषा को गैरहिन्दी भाषियों तक पहुंचा दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी के बढ़ते वर्चस्व की पड़ताल की गई है।

प्रस्तावना

“भाषा मनुष्य का एक प्राणवान संस्कार है, मनुष्य भाषा का निर्माण करता है और भाषा मनुष्य का”1 पं.नेहरू के भाषण का अंश। भाषा आदमी की पहचान है, भाषा ताकत है, भाषा ही है जो उसे सामाजिक बनाती है। संवेदनाएं, भावनाएं ,सुख-दुख, राग-विराग, प्रेम-घृणा,क्रोध-करुणा सभी अनभिव्यक्त ही रह जाते यदि मनुष्य के पास भाषा न होती। भाषा अनिवार्य ही नहीं अपरिहार्य है। भाषा राष्ट्र को जोड़ती है, तोड़ती है संकीर्ण राजनीति, किन्तु भाषा बहता नीर है, बहती भाषा बाहरी भाषाओं या अन्य भाषाओं की बाढ़ हो या शुध्दतावादियो का सूखा हो अपने आप को बचा लेती है पूरी ताकत से अस्तित्व को कायम रखती है। हां, इस प्रयत्न में उसमें कुछ परिवर्तन होते हैं परन्तु यही अंततः भाषा की संप्रेषण क्षमता में अभिवृद्धि करते हैं और भाषा को संपर्क हेतु सक्षम बनाते हैं।

भारत की आधुनिक भाषाओं में हिन्दी ही सच्चे अर्थ में सदैव भारतीय भाषा रही है; क्योंकि वह निरन्तर भारत की एक समग्र चेतना को वाणी देने का प्रयास करती रही है।”2 और सभी भाषाओं में प्रदेश बोला है - कई बार बड़े प्रभावशाली स्वर में बोला है; हिन्दी में आरंभ से ही देश बोलता रहा है , भले ही कभी-कभी कमजोर स्वर में बोला है।”3

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। भारत में 1971 की जनगणना के अनुसार 1652 भाषाओं की गणना की गई थी। संविधान द्वारा स्वीकृत 22 भाषाएं हैं। प्रारंभ में संविधान में 14 भाषाओं को स्वीकार किया गया जिनके नाम हैं - असमी बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, काश्मिरी , मलयालम, मराठी, उडिया, तमिल, तेलगु, संस्कृत एवं उर्दू। बाद में सिंधी को भी सम्मिलित किया गया। अगस्त 1992 में हुए 71 वें संशोधन के अनुसार कोंकणी, माणिपुरी व नेपाली के सम्मलित होने से 18 भाषाएं हो गई। 92वाँ संशोधन, जो 2003 में हुआ उसके अनुसार चार और भाषाएं बोडो डोगरी, मैथिली और संथाली आठवीं अनुसूची में शामिल हो गई। इस तरह वर्तमान में 22 क्षेत्रीय भाषाएं स्वीकृत हैं।

हिन्दी भाषा में संपर्क भाषा होने की अभूतपूर्व क्षमता है। अन्य भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के समक्ष हिन्दी ही है जो भारतीय जनमानस के सबसे निकट है। 2001 की जनगण्ना में विदेशी भाषा अंग्रेजी भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं से कोसों

आगे है केवल एक भाषा जो अंग्रजी से आगे है वह है हिन्दी। देश के 55 करोड़ लोग हिन्दी बोलते या समझते हैं। उनमें हिन्दी 42 करोड़ लोगो की प्रथम भाषा, 9 करोड़ लोगों की द्वितीय भाषा और 3 करोड़ लोगों की तृतीय भाषा है। भारत के 28 राज्यों में से 9 राज्यों मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा है ही भारत की राजधानी और केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली की भाषा भी हिन्दी है। दक्षिण भारत में यद्यपि हिन्दी का थोड़ा कम प्रचलन है परन्तु महाराष्ट्र, गुजरात में तो हिन्दी का संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग हो ही रहा है। इसके अतिरिक्त उत्तर पूर्व राज्यों में भी हिन्दी का प्रचलन बढ़ रहा है मिजोरम, शिलांग, जोरहाट, उत्तर लखीमपुर तक हिन्दी में संवाद कायम है। कहा जा सकता है कि संपूर्ण भारत में हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में सहज स्वीकृत है और हिन्दी की इस व्यापकता में मीडिया का बहुत बड़ा हाथ है।

मीडिया और संपर्क भाषा हिन्दी

”मिडिया ने हिन्दी को नया जीवन दान दिया है; उसको नई इकनामी दी है, एक बाजार दिया है।”4

प्रिन्ट मीडिया - भारत में इस समय हिन्दी में बड़ी संख्या में अखबार प्रकाशित हो रहे हैं। प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में अंग्रेजी अखबारों को और क्षेत्रीय अखबारों को हिन्दी ने बहुत पीछे छोड़ दिया है। एबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछली सदी के आखिरी दशक में हिन्दी के बड़े दैनिकों की संख्या 181 थी। इन हिन्दी अखबारांे की संख्या इस बात का प्रमाण हिन्दी का पाठक समाज बढ़ रहा है। साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इन अखबारो से विषय जुटा लेता है और पढ़ने में उसकी रुचि बढ़ी है। प्रिंट मिडिया की तुलना में इलेक्ट्रानिक मीडिया ज्यादा घरों में पहुंचा है और इसी कारण इसकी लोकप्रियता भी अधिक है, परन्तु हिन्दी के बगैर इसका गुजारा नहीं और जब इसका हिन्दी के बगैर गुजारा नहीं तो इसे राष्ट्रव्यापी हिन्दी का निर्माण करना पड़ा। ऐसी हिन्दी जो हिन्दी पट्टी की बोलियों के साथ हाथ में हाथ डाल कर चल सके। जो गुजराती, मराठी और बंगला संस्कृति और भाषा को भी बोलचाल की हिन्दी के साथ जोड़ सके। दिल्ली दूरदर्शन के एक चैनल कार्यक्रम तक तो हिन्दी औपचारिक भाषा बनी रही परन्तु जैसे ही बहुचैनलीय कार्यक्रम आरंभ हुए तो बोलचाल की भाषा भी प्रयुक्त होने लगी। इन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिकों ने हिन्दी की बोलियों को भी प्रमुखता प्रदान की। हिन्दी जिसे 18 बोलियों का समूह कहा गया है किन्तु एक क्षेत्र या अंचल में रहने वाला दूसरे अंचल बोली से ज्यादा परिचित नहीं था। टीवी धारावाहिको के कारण ही हिन्दी पट्टी के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी अब भोजपुरी, राजस्थानी, हरियाणवी, ब्रज, अवधी बुंदेली को लोग जानने समझने लगे हैं। इसी तरह गुजराती, मराठी, बंगला भी भाषा और संस्कृति के स्तर पर जानी पहचानी लगने लगी है। उर्दू और पंजाबी तो पहले ही हिन्दी से जुड़ी हुई थी। खबरिया चैनलों ने राजनिति, खेल,श्येयर बाजार, खेती-किसानी, स्वास्थ्य, अपराध सभी समेट कर एक ऐसी भाषा इजाद की जो ठेठ गांव में रहने वाले और दिल्ली, मुंबई में रहने वाले आम आदमी से लेकर विशिष्ट आदमी तक अपनी बात पहुंचाने में सक्षम है। यही है हिन्दी का संपर्क भाषा रूप।

रीयलिटी शो ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में

सहयोग दिया है या सिध्द किया है कि हिन्दी बंगाल और आसाम में जाती पहुंचती है विशेष रूप से इंडियन आयडल, सा रे गा मा जैसे म्यूजिकल शो में जब बंगाल, आंध्र और आसाम से आकर हिन्दी में सही उच्चारण के साथ गा सकते हैं या गाने का प्रयत्न करते हैं तो वह हिन्दी की ग्रहणशीलता ही है।

रेडियो एफ.एम. के चलन से हिन्दी प्रसारण दिनभर जारी रहता है। हांलाकि इसकी भाषा जरूर कुछ खटकती है। बिग एफ.एम. का स्लोगन या सन्देश सूचक वाक्य है सुनो सुनाओ लाइफ बनाओ, रेडियो मिर्ची इट्स हॉट, आकाशवाणी, ये विविध भारती है, देश की सुरीली धड़कन। जहां बिजली नहीं है, लोग दिन भर घर या खेत में काम करते हैं या वे जो साधारण से काम करते हैं जैसे सिलाई, हलवाई किसी होटल में कप प्लेट धोते हैं, के लिए रेडियो दुनिया से जुड़ने का एक आसान साधन है और ये भी संपर्क भाषा हिन्दी को पोषित ही कर रहे हैं। एक ऐसी भाषा जो आई आई टी या तकनीकी संस्थानों की भी है और सुदूर ग्रामीण अंचल की भी है।

कम्प्यूटर और इन्टरनेट पर भी अब हिन्दी का प्रचलन दिन पर दिन बढता जा रहा है। कम्प्यूटर पर तो यूनीकोड के माध्यम से हिन्दी और देवनगरी लिपि स्वीकृत हो ही गई है। हिन्दी ब्लॉग, पोर्टल और वेबसाइट भी इसका प्रमाण हैं कि हिन्दी संपर्क के योग्य है। इ-पेपर, इ-पत्रिका के अतिरिक्त धर्म, समाज, कला, साहित्य, पर्यटन, ग्रामीण आदि से संबधित लगभग 40 वेबसाइट हैं।

हिन्दी को जनभाषा और संपर्क भाषा बनाने में हिन्दी सिनेमा का भी बहुत बड़ा सहयोग है। मुंबइया हिन्दी या टपोरी हिन्दी तो सिनेमा के माध्यम से प्रचलित हुई ही नये मुहावरे जैसे जादू की झप्पी, आओ ठाकुर, ज्यादा बोलने की आदत तो है नहीं भी दिये। हिन्दी फिल्मी गीतों ने भी हिन्दी के मान को बढ़ाया है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा था, "हिन्दी इसलिये बड़ी नहीं है कि हममें से कुछ इस भाषा में कहानी या कविता लिख लेते हैं या सभा मंचों पर बोल लेते हैं। नहीं, वह इसलिए बड़ी है कि कोटि-कोटि जनता के हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने में यह भाषा इस देश का सबसे बड़ा साधन हो सकती है। हमारे पूर्वजों ने दीर्घकाल की तपस्या और मनन से जो ज्ञान राशि संचित की है, उसे सुरक्षित रखने का सबसे मजबूत पात्र है। .... यदि देश में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को हमें जन-साधारण तक पहुंचाना है, तो इसी भाषा का सहारा लेकर हम काम कर सकते हैं। हिन्दी इन्हीं संभावनाओं के कारण बड़ी है।"5

इन्ही संभावनाओ को देखते हुए ही हिन्दी मीडिया की भाषा बनी हुई है और मीडिया इसे जनसंपर्क के अधिक से अधिक योग्य बना रहा है। क्योकि "यह महत्वपूर्ण बात है कि वही भाषा जीवित रहती है, जिसमें समकालीन चुनौतियों का सामना करने एवं आधुनिक संवेदनाओ को अभिव्यक्ति की शक्ति हो। इस अर्थ में हिन्दी सामर्थ्यवान, समृद्धशाली भाषा है।"6

संपर्क भाषा परिनिष्ठित, मानक या साहित्यिक भाषा से भिन्न होती है इसलिए इस बात के लिए शंकित होकर कि हिन्दी हिंग्लीश हो रही है या इसमें बहुत परिवर्तन हो रहे हैं, हम नये के लिए द्वार बन्द नही कर सकते। हिन्दी भी बनी रहेगी और उसका संपर्क भाषा वाला रूप भी बना रहेगा। हमें इतनी उदारता तो बरतनी ही पड़ेगी

संपर्क भाषा में पर्दादारी से काम नहीं चलेगा। हम भाषा को यदि दरवाजों में बन्द या किताबों में गुम रखना चाहते हैं तो भाषा के साथ खूब कट्टरता बरतिए। एक विद्वान साहित्यकार ने 'मोबाइल' के लिए 'बात पेटी' अनुवाद भी किया और इस शब्द को अपनाने का आग्रह भी किया। यद्यपि चलित दूरभाष पूर्व में इसका अनुवाद भी किया गया है। किन्तु चलन में तो 'मोबाइल' शब्द ही रहा। इतना चलन में कि प्रदीप सौरभ ने अपने उपन्यास का शीर्षक ही 'मुन्नी मोबाइल' रख दिया। मुन्नी की गतिशीलता मोबाइल से ही है उसे अर्थ मोबाइल ही देता है। उसका अनुदित रूप नहीं।

"इतना अहसास अब नई पीढ़ी को हो चला है कि हिन्दी भी कमाने की भाषा है, एक उपयोगी उत्पादक औजार और माफ करिए वह सिर्फ साहित्यिक भाषा नही है।"7

हिन्दी अब आत्महीनता की नहीं आत्मसम्मान की भाषा है। जरुरत है जानने की इसे जाना है प्रसून जोशी ने 'ठण्डा मतलब कोकाकोला,,जैसा विज्ञापन दिया तो विज्ञापनों में हिन्दी की एक नई लाक्षणिक व्यंजकता आई है। इनमें मानवीय सरोकार और मूल्य है। देखिए-न सर झुका है कभी-सर उठा के जियो में आत्माभिमान है बूढे होने पर भी क्यों दूसरे पर निर्भर बने, इसमें है हीरो- आत्म पहचान, सिर्फ उठो नहीं जागो, पूछने में क्या हर्ज है, सीधी बात नो बकवास, अपना लक पहन के चलो, पा लिया बिना कुछ खोये, दो बूंद जिन्दगी की, बेटी है तो कल है आदि। हिन्दी भारत की भाषा है इसीलिए भारत के जन मन तक वही पहुंच सकता है जो हिन्दी जानता है। सोनिया गाँधी की अटपटी ही सही हिन्दी भारतीयों से सपंर्क कराती है और कितने ही सरल और सहज, कितने ही विचारवान हमारे प्रधानमंत्री माननीय मनमोहन सिहं जी हिन्दी न जानने और न बोलने के कारण भारतीय जनमन से दूर हैं। अन्ना, अरविन्द केजरीवाल और किरण बेदी यदि क्षेत्रीय भाषा में अपने आन्दोलन चलाते तो वह इतना राष्ट्रव्यापी नहीं बन पाता जितना हिन्दी के कारण बना है।

हिन्दी केवल भारत की ही संपर्क भाषा नही वरन् यह तो वैश्विक होने की भी क्षमता रखती है "हिन्दी को वैश्विक संदर्भ प्रदान करने में विश्वभर में फैले हुए तीन करोड़ से ज्यादा प्रवासी भारतीयों का विशेष प्रदेय है। वे हिन्दी द्वारा अन्य भाषा-भाषियों के साथ सांस्कृतिक संवाद कायम करते हैं। अब हिन्दी विश्व के सभी महाद्वीपों तथा राष्ट्रों जिनकी संख्या 140 से अधिक है में किसी न किसी रूप मे प्रयुक्त हो रही है। वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर मंदारिन (चीनी) के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है जबकि वह जिन राष्ट्रों में प्रयुक्त हो रही है उनके संख्या बल की दृष्टि से अंग्रेजी के बाद दूसरे स्थान पर है। हिन्दी को वैश्विक परिदृश्य प्रदान करने में फिल्मों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशन संस्थानों, भारत सरकार के उपग्रह-चैनलों, विज्ञापन-एजेंसियां, बहुराष्ट्रीय नियमों, यांत्रिक सुविधाओं तथा शिक्षण प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से प्रशिक्षित पेशेवर मानव संसाधन का विशिष्ट अवदान रहा है। भारतीय युवा भी अपनी संवेदना और संस्कृति से दूर अमेरिका में भी मुनव्वर राणा, मधुशाला और गालिब से जुड़ा है तो इसी भाषा की बदौलत और कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी-इस कुछ बात में एक बात संपर्क भाषा हिन्दी की व्यापकता भी है जिसने भारत के कोने कोने में अपनी पहचान बनाई है।

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2013

इसमें गालिब का अंदाजे बयाँ कुछ और भी है तो बिहारी की 'और कछु' भी है जिहि बस होत सुजान।'

संदर्भ

1. भूमण्डलीकरण, भारत की भाषा समस्या और डा. लोहिया- ब्रजकुमार पंडित, वाक्-2007 अंक 3 पृष्ठ 110
2. सांस्कृतिक चेतना और हिन्दी - रमेश चन्द्र शाह अक्षरा - सितम्बर - अक्टूबर - 2009 पृष्ठ 09
3. वही
4. उत्तर आधुनिक मीडिया विमर्श, सुधीश पचौरी पृष्ठ 127
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. सामाजिक विकास में हिन्दी की भूमिका - कैलाश चन्द्र जायसवाल अक्षरा - सित.- अक्टू.-09
7. हिन्दी का विश्व संदर्भ - डा. करूणाशंकर उपाध्याय - फ्लैप पर